BANGLES

चूड़ियाँ

चूड़ियाँ

BANGLES

Bangles have been important items among the ornaments of Indian women as they are supposed to mirror the moods and inner feelings of the wearers. Bangles have been a part of human life since ancient times. With the development of civilisation, the shapes and colours of bangles have been altered continuously, and the most polished forms are available in today's glass-bangles.

Bangles were discovered among the archeological finds of the Indus Valley Civilisation, and in their long history since then, glass bangles represent most interesting stages of progres. In Uttar Pradesh they form an important item to indicate the married status of a woman.

In ancient times bangles made of bones, iron, and copper were in vogue During the Gupta period also, bangles had an important place among female ornaments. Nor have these ancient and traditional forms been discarded. In Rajasthan bangles with stones studded on lac are very popular, and in both Rajasthan and Punjab, ivory bangles are in great vogue. Married women in Bengal wear bangles of iron and conch. The women of South India have always preferred gold bangles.

In Uttar Pradesh although the married women always wear glass-bangles, they like to wear gold-covered lac-bangles with delicately painted designs ("*Meenaakari*") on several special occasions. In the *"Yajurveda"*, glass and mirror are mentioned as part of female ornaments. The arms of Goddesses in paintings and of their idols in temples are always decked with numerous bangles. Even in ancient times, glass was extracted from sands through chemical processes. Later on, this became the profession of wandering Gypsies (*"Banjaras"*) who came to be known as *"Sheesagar"* during the Mughal period.

By the end of the 16th century, glass-became a wide-spread industry all over North India, and by the 19th century the demand for glass-bangles, their manufacture, and sales became major industries : Ferozabad became the most important centre. Today lakhs of families are earning their livelihood from this

industry. A large variety of bangles is made in Ferozabad such as plain bangles, "silken", cut-glass, colourful, and with golden designs, and so on. Cutting, designing, gold-washing are all done according to the tastes and demands of the customers. The demand for these comes not only from various provinces of India, but from several Central Asian countries. The glass-bangles of Ferozabad are bought by wholesale traders and supplied to the shops of "Manihars". Shops selling these sparkling bangles are always crowded with women. On special festivals, these crowds swell manifold.

On occasions like *"Hariyali theej"* and *Id*, the arrays of bangles are worth watching, because in Uttar Pradesh glass-bangles are special marriage symbols for both Hindu and Muslim women. While glass-bangles add to the delicate beauty of young maidens, they are also believed to indicate the devotion of married women. The jinglings of these bangles have spoken the language of love since ages.

Yogesh Praveen

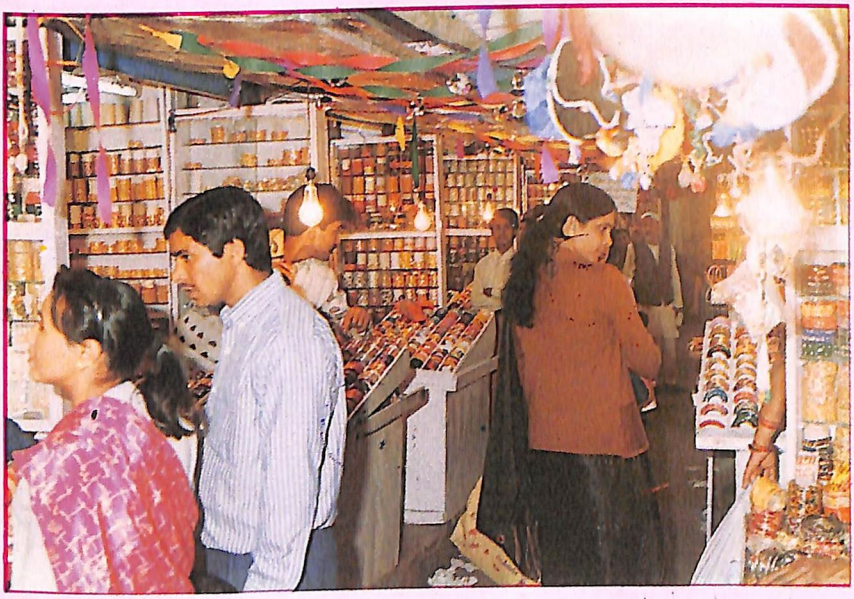

चूड़ियों का बाजार

चूड़ियाँ

भारतीय औरतों के श्रृंगार प्रसाधनों में चूड़ियों का बड़ा महत्त्व है। ये नारी मन की अभिव्यक्ति का सुन्दर साधन रही है। मानव जीवन के साथ चूड़ियों का सम्बन्ध बहुत पुराना है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ चूड़ियों के रूप-रंग में परिवर्तन होता चला गया जिसका सबसे विकसित स्वरूप है-काँच की चूड़ियाँ।

सिन्धु घाटी सभ्यता की पुरातात्विक सम्पदा में भी चूड़ियाँ मिलीं थीं और तब से लेकर आजतक इन चूड़ियों की यात्रा का इतिहास अनवरत है और काँच की चूड़ियाँ उसकी सबसे दिलचस्प मंजिल है। उत्तर प्रदेश में तो ये चूड़ियाँ स्त्रियों का प्रमुख सुहाग चिन्ह रही है।

पुराने ज़माने में हड्डी, लोहे और ताँबे की चूड़ियों का चलन रहा है। गुप्तकाल में नारी आभूषणों में चूड़ियों की अच्छी प्रतिष्ठा थी। चूड़ियों के पुराने और परम्परागत तरीके बिल्कुल गुम हो चुके हों, ऐसा भी नहीं है। राजस्थान में लाख की जड़ावदार चूड़ियाँ और हाथी दाँत की चूड़ियाँ आज भी प्रचलन में हैं। पंजाब में भी हाथी दाँत का चूड़ा पहना जाता है। बंगाल में लोहे और शंख की चूड़ियाँ सुहाग प्रतीक के रूप में पहनी जाती हैं। दक्षिण भारत में सोने की चूड़ियाँ अधिक पहनी जाती हैं।

अवध में भी लाख की बारीक चूड़ियों पर सुनहरा तबक चढ़ाकर उस पर रंगीन पन्नी से मीनेकारी की जाती है और आम अवसरों पर ये *सहाना* जोड़ा पहना जाता है। लेकिन अधिक प्रचलन काँच की चूड़ियों का है।

''यजुर्वेद'' में नारी के श्रृंगार प्रसाधनों में काँच और शीशे की चर्चा मिलती है। देवियों के चित्रों और मन्दिरों की मूर्तियों के हाथ सदा चूड़ियों से सजे मिलते हैं। रेत से काँच निष्कर्षण करने के लिए पुरानी रासायनिक विधि का प्रयोग होता था। बाद में यह उपयोग बनजारों का व्यवसाय बन गया। ऐसे बनजारे मुग़लकाल में शीशागर कहे जाने लगे थे।

१६वीं सदी के अन्त तक काँच की चूड़ियों का कारोबार उत्तर भारत में बड़े पैमाने पर स्थापित हो गया और फिर १९वीं शताब्दी तक चूड़ियों की माँग और इसके व्यापार का पैमाना इस हद तक पहुँचा कि उत्तर प्रदेश का फिरोजाबाद नगर चूड़ी उद्योग प्रतिष्ठानों का गढ़ बन गया। आज लाखों

परिवार इस उद्योग में लगकर अपनी जीविका चला रहे हैं। फिरोजाबाद में तमाम तरह की सादी, रेशमी, कट-ग्लास और रुपहली, सुनहरी कामदार चूड़ियाँ बनती हैं। इन चूड़ियों पर रुचि और जनता की माँग के अनुसार कटिंग की जाती है, डिजाइनिंग की जाती है और फिर सोने के पानी से चमक दी जाती है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के अलावा मध्य एशिया के तमाम देश भी इन चूड़ियों के खरीददार हैं।

फिरोज़ाबाद की बनी काँच की चूड़ियाँ थोक व्यापारियों के द्वारा मनिहारों की दूकानों तक पहुँचती हैं। झिलमिलाती हुई चूड़ियों की दुकानो पर औरतों की भीड़ हमेशा ही लगी रहती है लेकिन तीज-त्यौहारों पर तो मेले लग जाते हैं।

सावन की हरियाली तीज और ईद के अवसर पर चूड़ियों की बहार देखते ही बनती है। अवध में काँच की चूड़ियाँ हिन्दू और मुस्लिम, दोनों घरों में सुहाग की निशानी है।

काँच की चूड़ियों में किसी कुँआरी का कौमार्य है, तो स्त्री के सर्वस्व का समर्पण भी है। इन चूड़ियों की दिलफ़रेब झनकार के पास प्रेम की जो पूर्ण भाषा है, उसका एहसास सदियों से सबको है।

योगेश प्रवीन

अंग्रेजी अनुवाद : **श्रीमती सुशीला मिश्रा**
छाया चित्र : **योगेश प्रवीन**

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. द्वारा प्रकाशित एवम् **शिवम आर्ट्स**, 211, निशातगंज लखनऊ दूरभाष - 386389 द्वारा मुद्रित।